कायदों में प्रतिबिम्बित अजराड़ा का तबला

गायत्री(शोध छात्रा)
संगीत विभाग
दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट
(डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़,आगरा

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के अजराड़ा गॉव के निवासी तबला वादक उ0 कल्लू खाँ और उ0 मीरू खाँ द्वारा इस बाज का स्थापना एवं विकास हुआ। कल्लू खाँ एवं मीरू खाँ दोनों भाइयों ने दिल्ली आकर उ0 सिद्धार खॉ के पौत्र उ0 सिताब खॉ से तबला वादन की शिक्षा प्राप्त की अतएव अजराड़ा बाज में दिल्ली की सारी विशेषताओं का आना स्वाभाविक है।

कायदा– कायदा ''फारसी'' भाषा के ''कैद'' शब्द से बना है जिसका अर्थ है– नियम, तरीका, ढंग, विधान या विधि। कुछ विद्वान ''कैद'' शब्द की उत्पत्ति ''फारसी'' भाषा से मानते हैं तथा कुध ''अरबी'' भाषा से मानते हैं। तबले के व्याकरण में सबसे महत्वपूर्ण स्थान रखने वाला प्रत्यय कायदा अत्यन्त विशेष रचना है। कायदे का अर्थ 'नियम' है जिसके अन्तर्गत बोलों को एकरूपता से बाँधा जाता है। ताल के नियम जैसे मात्रा, अंग, कियाएँ ताल का चलन आदि एवं ताल के दश प्राणों का प्रयोग कायदा एवं उसके विस्तार में किया जता है। दांये–बायें के वादन पर वादक का प्रभुत्व, लय की स्थिरता, कल्पना शक्ति, ताल स्वरूप एवं उसके नियम का ज्ञान वादक के कायदा वादन से सहज ज्ञात होता है। जिस प्रकार विभिन्न शब्दों द्धारा तबले के मूल वर्णों का परिचय कराया जाता है।

''कायदा'' तबला स्वतन्त्र वादन का बहुत ही महत्वपूर्ण भाग है साथ ही यह केवल तबला ताल वाद्य पर ही बजाया जाता है तथा स्वतन्त्र वादन की तालों जैसे– तीनताल, झपताल, रूपक, आडाचारताल आदि में बजाया जाता है। कायदे का विस्तार बड़त एवं पल्टों के द्वारा किया जाता है अन्त में तिहाई बजाकर समपन किया जाता है।

अजराड़ा के कायदों की विशेषताएँ–

- अजराड़ा घराने में कायदें की रचनाएँ अधिकतर तिस्त्र जरति में बजायी जाती हैं।
- अजराड़ा क कायदों में डग्गे का प्रयोग मोंड़युक्त, सुन्दर एवं दाहिने के बोलो से लड़ता हुआ चलता है।
- अजराड़ा के कायदो से अनामिका का प्रयोग प्रारम्भ हुआ। इससे कुध बोल जैसे 'धिनगिन' अत्यन्त सरलता से द्रुत लय में बजने लगे। इस बोलसमूह में 'न' तर्जानी से चांटी पर न बजकर अनामिका से स्याही के पूर्व भाग पर निकाला जाने लगा।
- अजराड़ा घराना कायदों की खूबसूरती और विविधता के लिए विशेष प्रसिद्ध है। यहाँ के कायदे धा और धिं के उपरान्त कत, त्ति, धिगन, घेनक आदि बोलों से भी प्रारम्भ होते हैं।
- अजराड़ा के कुछ कायदों में एक और विशेषता देखने को मिलती है जों कायदे के उत्तरार्द्ध अर्थात खाली (मुंदी) से सम्बधित है। अधिकांश कायदों के उत्तरार्द्ध भाग का पुर्वाद्ध का (बायाँ रहित) होता है। परन्तु यहाँ उत्तरार्द्ध के बोल बदल दिये जाते हैं।

कायदा–1

घेघेनति टधागेन दिंगनति टधागेन । घघेनति टधागेन तिटधाग तिनकिन ।

ग 2

केकेनति टताकेन तिंकनति टताकेन । घेघेनति टधागेन तिटधागे धिनगिन ।

0 3

उपरोक्त कायदा चतस्त्र जाति का कायदा है। इसका प्रारम्भ घेघेनति बोल अर्थात 'घ' से हुआा है। अजराड़ा की वादन शैली में धाा, धिं, धिडनग, घेघेनति, धिड़नग आदि बोलों से भी कायदों का प्रारम्भ किया जाता है। इसके अतिरिक्त इस कायदे में दिंगनति, टधागेन , तिनकिन आदि बोलों का प्रयोग भी किया गया है साथ ही डग्गे के माध्यम से सौन्दर्यता तथा आकर्षकता उत्पन्न की गई है तथा दॉव– गॉस का पयोग भी किया गया है।

कायदा–2

धागेनधिं ऽनधाऽ धाऽघेघे नगधिन । धगेत्रक धीनातिट धागेत्रक धिनागिना।

ग 2

धाऽधाऽ घेघेनग दिंगदिना घेघेनग। तिटघेघे नगदिंग नगतिंक तिनाकिना।

0 3

ताकेनतिं ऽनताऽ ताऽकेके नकतिंक। ताकेत्रक तीनातिट ताकेत्रक तिनाकिना।

ग 2

धाऽधाऽ घेघेनग दिंगदिना घेघेनग। तिटघेघे नगदिंग नगतिंक तिनाकिना।

0 3

उपरोक्त कायदा चतस्त्र जाति का कायदा है तथा उपरोक्त कायदें का प्रारम्भ धगेनधिं ऽनधाऽ बोल से हुआा है अर्थात उपरोक्त कायदे में ज़र्ब का भी प्रयोग हुआ है। साथ ही इसमें धाऽघेघे, नकधिन, धागेत्रक, धोनातिट, दिनगिन आदि बोलों का प्रयोग हुआ है इन्ही बोलों के माध्यम से कायदे में सौन्दर्यता तथा आकर्षकता उत्पन्न हुई है। इस कायदे में डग्गे का प्रयोग दावॅ– गॉस तथा दायें– बायें की लडन्त के साथ किया गया है।

कायदा–3

धातगघेतग धिनधातीधिन धातगघेतग दिंगदिनागिन । घेतगघेतग धिनधातीधिन धातगघेतग तिंकतिनाकिन।

ग 2

तातककेतक तिनतातीकिन तातककेतक तिंकतिनाकिन । घेतगघेतग धिनधातीधिन धातगघेतग दिंगदिनागिन।

0 3

उपरोक्त कायदा तिस्त्र जाति का कायदा है जा कि अजराड़ा घराने की मौलिक विशेषता है। इस कायदे का प्रारम्भ धातगघेतग बोल से हुआ है तथा इसमें धिनधातीधिन, घेतगघेतग, दिंगदिनागिन, तिंकतिनाकिन आदि बोलों का प्रयोग हुआ है साथ ही न बोल के निकास में अनामिका का प्रयोग किया गया है।

कायदा–4

धिड़नग धिनधाग तकधिन धागेत्रक । धागेनाधा त्रकधिन धागेत्रक धिनागिना ।

ग 2

धागेनाग धिनधागे नागेधिन धागेत्रक । धागेनाधा त्रकधिन धागेत्रक तिनाकिना ।

0 3

किड़नक तिनताके तकतिन ताकेत्रक । ताकेनाता त्रकतिन ताकेत्रक तिनाकिना ।

ग 2

धागेनागे धिनधागे नागेधिन धागेत्रक । धागेनाधा त्रकधिन धागेत्रक धिनागिना ।

0 3

उपरोक्त कायदा चतस्त्र जाति का कायदा है प्रस्तुत कायदे का प्रारम्भ धिड़नग बोल से हुआ है अर्थात बायें से इसका प्रारम्भ हुआ है। यह अजराड़ा की मौलिक विशेषता है साथ ही इस कायदे मे ड़ग्गे का प्रयोग अधिकतम रूप से किया गया है। उपराक्त कायदा बड़ी मौहर का कायदा है। बड़ी मौहर से तात्पर्य बड़े कायदे से है अर्थात अजराड़ा घराने में 32 मात्रा के कायदे भी बजायें जाते हैं जिसमें दोनों भागों में 16– 16 मात्रायें होती हैं। जैसे 16 मात्रा की भरी और 16 मात्रा की खाली।

कायदा–5

धाऽक्रधा तीधागेना धातीधाग धिनगिन ।
धीनाक्रधा तीधागेना धातीधागे तिनकिन ।

ग 2

ताऽक्रता तीताकेना तातीताक तिनकिन। धीनाक्रधा तीधागेना धातीधाग धिनगिन ।

0 3

उपरोक्त कायदा चतस्त्र जाति का कायदा है। इस कायदे में धाऽक्रधा, तीधागेन, धीनाधगे, धीनाक्रधा, तिनकिन आदि बोलों का प्रयोग किया गया है। इस कायदे की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें क्षणभर भी ठहराव या रूकावट नहीं है।इसमें दोंनों हाथ बराबर चलते रहते हैं इस कायदे में ड़ग्गे का प्रयोग अधिकतम रूप से किया गया है।

कायदा–6

धागेदिऽ ऽऽधागे तिरकिट नगदिंग । दिनागिना
नगदिंग नगदिंग दिनागिना ।

ग 2

धागेतिट घेघेनग दिंगदिना घेघेनग । तिटघेघे
नगदिंग नकतिंक तिनाकिना ।

0 3

ताकेतिंऽ ऽऽताके तिरकिट नकतिंक । तिनाकिना
नकतिंक नकतिंक तिनाकिना ।

ग 2

धागेतिट घेघेनग दिंगदिना घेघेनग । तिटघेघ
नगदिंग नकतिंक दिनागिना ।

0 3

उपरोक्त कायदा चतस्त्र जाति का कायदा है। इस कायदे का प्रारम्भ `धागेदिं बोल के साथ हुआ है तथा इस कायदे में प्रारम्भ में ही ज़र्ब का प्रयोग किया गया है। ज़र्ब से तात्पर्य जब कायदे में 1/2 मात्रा का ठहराव हो।इस कायदे में दिंगदिनागिना बोल के निकास में अनामिका अंगुलि का प्रयोग किया गया है यह अजराड़ा की मौलिक विशेषता है।इसा कायदे में डग्गे का प्रयोग बड़ी ही सुंदरता से किया गया है साथ ही इसमें मींड़ युक्त वादन किया गया है। उपरोक्त वर्णित समस्त कायदों में आड़ लय एवं बराबर की लय का प्रयोग किया गया है तथा इन कायदों में अजराड़ा की अन्य विशेषताऐं जैसे बोल, निकास, लय आदि का भी वर्णन किया गया है। कायदे में निहित लयकारियाँ, जर्ब, आदि पर भी प्रकाश ड़ाला गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. तबले के घराने वादन शैलियाँ एवं बन्दिशें'– डॉ0 सुदर्शन राम
2. तबले का उदगम विकास और वादन शैलियाँ''– डॉ0 योगमाया शुक्ल
3. पखावज एवं तबला के घराने एवं परम्परायें– डॉ आबान ई0 मिस्त्री
4. ताल कोष– आचार्य गिरिश चन्द्र श्रीवास्तव